और सबसे अहम बात यह है कि हर मोमिन खुद से पूछता है:

"क्या ऐसा हो सकता है कि अल्लाह इतने पाकीज़ा अज़ीज़ों को एक ही वक़्त में क़ुर्बानगाह तक ले जाए?"

क्या ही अज़ीम है यह ख़ुदा!

और कैसे देखा जाए उसके इस अमल को कि देखने वाला उसे "हुस्न" यानी ख़ूबसूरती भी माने।

कर्बला और आशूरा – यह मैदान,ख़ालिस तौहीद की नुमाइश का मंजर है।

ऐसे लाजवाब मंज़र जो अक़्लों और गुमानों को हैरत और खौफ़ में डाल देते हैं।

यह कौन सा ख़ुदा है

जो अपने रसूल के नवासे के साथ ऐसा करता है – और उसे यह इजाज़त देता है कि वह पूरी इंसानियत की हिदायत के लिए इस अज़ीम मुसीबत को झेले।

हमारे साथ जुड़िए...

धर्म और ज्ञान

حب الحسین یجمعنا

एक ऐसी दुनिया में जहाँ धोखा और दिखावा, झूठ और छल, चालाकी और मक्कारी

सच की जगह ले चुके हैं और अंधकार को ही प्रकाश समझा जाता है;

वहाँ एक रौशनी के तीर से अंधकार के दिल को निशाना बनाना होगा और प्रकाश का विस्फोट करना होगा;

प्रकाश की खोज के लिए एक क्रांति करनी होगी।

अबा अब्दिल्लाह अल-हुसैन

"हर दिन आशूरा है, हर ज़मीन कर्बला है"

हम अल्लाह के दुश्मनों के मुक़ाबले में, उसके दोस्तों के साथ खड़े हैं।

हमने हरम-ए-अबा अब्दिल्लाह (अ.स) तक राह पा ली है और अपने आपको ज़ालिमों और नामर्दों की सफ़ से अलग कर लिया है।

जैसे-जैसे आशूरा की रात और दिन क़रीब आते जाते हैं, हम खुद को अपने ख़ालिक़ के और क़रीब पाते हैं।

यह दुनिया हमारे हिसाब से नहीं चलती, और यह मुक़र्रर हो चुका है कि इस मैदान में या तो हम शहीद होंगे या क़ैद में जाएंगे।

क्या ही अज़ीम है यह ख़ुदा!

अक़्लें उसके इस इरादे से कांप उठती हैं।

आँखें तक़दीर को बदलने के लिए घूमती हैं, घबराती हैं, मगर कोई रास्ता नहीं पातीं – और आख़िरकार हसरत में गिर जाती हैं।

समझ व तदबीर इस बड़ी मुसीबत की वजह को समझने में हार मान लेती है।

और वहम व गुमान अपने बयानात में सिर्फ़ आह, दुआ और दर्दनाक बेक़रारी की चीख़ें बन जाते हैं।

विजय

चाहे जंग हो या अमन, खुशी हो या ग़म, आसानी हो या मुश्किल, सुकून हो या बेचैनी – हर हाल में दिल को अल्लाह से जोड़ दे और उसकी याद को कभी न भूल।

यही है असली विजय का राज़।

दुनिया की रोज़मर्रा की ज़िंदगी तुझे गफ़लत में न डाल दे, और इसके दुख-दर्द तुझे अल्लाह की याद से दूर न कर दें।

जितना हम अपने अंदर अल्लाह के ज़िक्र और उसकी याद को बढ़ाएंगे, उतनी ही दुनिया की ग़फ़लत और बेख़बरी दूर होगी – और यह दुनिया अल्लाह की रहमत के क़रीब होती जाएगी।

यह अल्लाह का पक्का वादा है।

अगर हम "हय्युल-क़य्यूम" – अल्लाह के इस नाम के साथ उसे याद करें, तो वह हमें ज़िंदगी (हयात) और इस्तिक़ामत (क़याम) की दौलत अता करेगा।

इस्लाम

हम जिस दौर में जी रहे हैं, वह पूरे समय का केवल एक हिस्सा है, न कि संपूर्ण युग।

आदम और हव्वा अलैहिमा अस्सलाम ने धरती पर उतरने के बाद तौहीद (एकेश्वरवाद) का झंडा बुलंद किया, लेकिन उन्हें क़ाबील की ख़यानत का सामना करना पड़ा।

यह झंडा एक नबी से दूसरे नबी तक, हाथों में हाथ डाले, कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ता गया, और क़ाबील जैसे लोग एक-एक कर के तारीख़ की स्याही में डूबते चले गए।

आज तौहीद का यह झंडा बक़ियतुल्लाह के कंधों पर है।

वह तमाम अंबिया और औलियाए इलाही का बाकी रह गया वारिस है – और क़ाबीलों की जमातें कतार में खड़ी होकर उसके मुक़ाबले में उतर आई हैं।

हक़ का यह सिलसिला एक निरंतर बहने वाली धारा है – आदम (अ.स) से लेकर बक़ियतुल्लाह तक – और इसका यह सिलसिला कभी भी, एक पल के लिए भी, टूटने नहीं पाया।

जो सदा आज दुनिया के मज़लूमों से सुनाई दे रही है, वह उसी सदा की गूंज है जो इतिहास की शुरुआत से अब तक तमाम दबे-कुचले लोगों की आवाज़ रही है।

और आज हम, इसी हक़ के सिलसिले में, तौहीद के झंडाबरदार बन गए हैं।

अज़ीज़ परमेश्वर २

आज की हमारी कार्रवाइयों का कोड नाम है - "अज़ीज़" - अल्लाह का वह नाम जो उसकी रबूबियत की शक्ति और सामर्थ्य को प्रकट करता है।

अल्लाह की ताक़त यूँ ज़ाहिर होती है:

कि कैसे एक मज़लूम क़ौम पूरी दुनिया की महबूब बन जाती है।

कैसे एक महान इंक़लाब (क्रांति), सारी दुनिया में जगह बना लेता है और चर्चा का विषय बन जाता है।

कैसे हालात की वजह से, दीन के दुश्मनों के ख़िलाफ़ एकता पैदा होती है।

कैसे ज़ालिम और मुनाफ़िक़, अपने ही हाथों से अपने घरों को बरबाद कर डालते हैं।

कैसे दुनिया के मगरूर और ताक़तवर समझे जाने वाले लोग ज़लील हो जाते हैं।

कैसे तेज़ी से दुनिया के हालात, नकली सुपरपॉवरों के ख़ात्मे की तरफ़ बढ़ते हैं।

मुजाहिद

सच्चा मुजाहिद वह है जो अपनी जान, माल और जो कुछ भी उसके पास है, उसे अल्लाह की राह में लगा देता है और सिर्फ उसी के लिए मेहनत और कोशिश करता है।

ऐसा शख़्स अपने मक़सद तक पहुँचने और अल्लाह के दुश्मनों पर ग़लबा पाने के लिए हमेशा एक सोच-समझ कर बनाई गई योजना रखता है और कभी भी अपनी ज़िम्मेदारियों से गाफ़िल नहीं होता।

इसलिए, सच्चा मुजाहिद अपनी ज़िंदगी की योजना और रफ्तार में जद्दोजहद और लगातार मेहनत करता है। वह अपने दुश्मन से मुकाबला करते हुए कभी भी बिना इल्म और बसीरत के क़दम नहीं बढ़ाता।

मुजाहिद, असल में एक ऐसा मुजतहिद है जिसके अकीदे पुख़्ता और मुकम्मल होते हैं, जिसका अमल दुरुस्त, वक्त पर और हिकमत से भरपूर होता है, और जिसकी निगाहें ऊँचे मक़सदों पर होती हैं – जो वली-ए-इलाही की राह के हमआहंग होते हैं।